INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL
ISSN NO : 2230-7850
IMPACT FACTOR : 5.1651 (UIF)
VOLUME - 12 | ISSUE - 6 | JULY - 2022

जयपुर, केन्द्रीय संग्रहालय में संगृहीत लघु चित्र : शैली एवं विषय

डॉ. रमेश चंद मीणा
सहायक आचार्य – चित्रकला , राजकीय कला महाविद्यालय कोटा.

जयपुर, केन्द्रीय संग्रहालय के प्रथम तल पर अवस्थित तीन दीर्घाओं में लघुचित्र संगृहीत हैं। जिनका सम्बन्ध राजस्थानी शैली– मेवाड़ शैली, बूंदी शैली, कोटा शेली, जयपुर शैली, किशनगढ़ शैली, जोधपुर शैली, बीकानेर शैली आदि मुगल शैली पहाड़ी शैली, कम्पनी शैली आदि शैलियों से है। प्रस्तुत लघुचित्र संग्रह को जयपुर, केन्द्रीय संग्रहालय के समस्त समृद्ध संचय का **संग्रहराज** कहा जा सकता है।

1. राजस्थानी शैली

प्रागैतिहासिक काल से राजस्थान चित्रकला के क्षितिज पर अपनी प्रभावी उपस्थिति दर्ज करवाता है। स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व विभिन्न रियासतों व रजवाड़ों केआश्रय में पनपी लघुचित्र शैलियों के लघुचित्रों का राजस्थान में अक्षय भण्ड़ार है। सम्प्रति, राजस्थानी शैली से अभिप्रायः चित्रकला की एक ऐसी शैली से है, जो पश्चिमी भारतीय शैली या अपभ्रंश शैली के अनुभवों से छनकर राजस्थान प्रदेश में जन्मी व पल्लवित हुई। कला समीक्षकों ने राजस्थानी चित्रकला को भौगोलिक तथा शैलीगत आधारों पर निम्नलिखित मुख्य शैलियों में वर्गीकृत किया है[1]–

1. **मेवाड़ शैली–** उदयपुर, देवगढ़, नाथद्वारा
2. **हाड़ौती शैली–** बूंदी, कोटा, झालावाड़
3. **ढूंढार शैली–** आमेर, जयपुर, अलवर, उनियार
4. **मारवाड़ शैली–** जोधपुर, बीकानेर, किशनगढ़, नागौर, अजमेर।

1. A. मेवाड़ शैली

मेवाड़ शैली के जन्म के साथ ही राजस्थानी शैली का प्रादुर्भाव होता है। मेवाड़ आरम्भिक राजस्थानी चित्रकला का एक महत्त्वपूर्ण केन्द्र रहा है।[2] जयपुर, केन्द्रीय संग्रहालय में मेवाड़ शैली से सम्बंधित संगृहीत चित्र निम्न हैं।

1. **हर्षवर्द्धन के कवि बाणभट्ट की कादम्बरी पर आधारित–** नृप द्वारा यज्ञ, पिंजरबद्ध वैश्म्पायन शुक की राजदबार में उपस्थिति, वैश्म्पायन शुक अपने पूर्व जन्मों की कथा राजा को सुनाते हुए, चन्द्रपीड़ के दरबार में शुक रूप में पुनर्जीवित पिंजरबद्ध वैश्म्पायन तथा आदिवासी वनबाल आदि।
2. **11वीं सदीं में श्री कृष्ण मित्र द्वारा अभिरचित प्रबोध चन्द्रोदय पर आधारित–** पर्वत पर तपस्या करता हठयोगी, चलायमान मन, क्रोध का कथन, वासना का कथना, करूणा व शांति आदि।
3. **महाभारत के खिलभाग हरिवंश पुराण पर आधारित–** नृसिंह अवतार, हिरण्यकुश्यप वध, देवासुर संग्राम, भस्मासुर व नृप कुवलय का युद्ध, करवीपुर में राम लखन का आश्रय स्थल आदि।

4. **सूरसागर पर आधारित–** आलिंगनबद्ध कृष्ण व राधा, विरह व वर्षा ऋतु, राधा से कृष्ण का प्रणय निवेदन, गायों के साथ लौटते कृष्ण का गोपियों द्वारा अभिनन्दन आदि।
5. **12वीं सदीं में जयदेव कृत गीत–गोविन्द पर आधारित–** गोपियों के मध्य नृत्यरत कृष्ण की सूचना राधा को देती सखी, सखी द्वारा वर्णित कृष्ण–गोपियों की कामक्रीड़ा, विष्णु का वराह रूप, नृसिंह अवतार, जयदेव द्वारा सरस्वती का आह्वान, जयदेव द्वारा कच्छप पूजा, जयदेव द्वारा मत्स्यावतार पूता, जयदेव द्वारा विष्णु को दसावतार स्मरण, सखी द्वारा कृष्ण का परिचय, राधा व सखियों का कृष्ण मिलन, सखी द्वारा कृष्ण की **ललितक्रीड़ाओं** की सूचना राधा को देना आदि।
6. **1591 ई. में केशवदास कृत रसिक प्रिया पर आधारित–** नायिका द्वारा नायक प्रतीक्षा, प्रियतम के संदेश की प्रतीक्षा, वियोग श्रृंगार, जलक्रीड़ा, विरह सन्ताप की शांति के उपाय, प्रिय आगमन का संदेश, कृष्ण रहित गोकुल में राधा, कृष्ण–गोपियों का नृत्य, कृष्ण रहित गोकुल में राधा, नायक–नायिकाओं को प्रेम मिलन, संयोग श्रृंगार का आनन्द आदि।
7. **8वीं सदीं में भवभूति कृत मालती माधव पर आधारित–** माधव केस्वरूप का वर्णन सुनकर बने चित्र को भगवती कामंदी से लज्जावश छुपाती मालती, भवभूति अपने नगर में, प्रेमाशक्त मालती का माधव के स्थान पर राजा के मित्र से विवाह आदेश व स्थिति, माधव व उसके मित्र का वार्तालाप, माधवागमन आदि।
8. **चन्द्रवरदायी कृत पृथ्वीराजरासों पर आधारित–** वर्षा ऋतु में पृथ्वीराज को रोकती इन्द्रवती व कामदेव के पुष्पबाणों से अपने ह्रदय को रोकते ऋषि व शेष शैय्या आसीन लक्ष्मीनारायण, पृथ्वीराज का युद्ध देखती संयोगिता, पृथ्वीराज द्वारा संयोगिता हरण, पृथ्वीराज व संयोगिता घुड़सवारी करते, पृथ्वीराज द्वारा शत्रु सेना पर आक्रमण, पृथ्वीराज का दरबार आदि।
9. **विष्णु शर्मा अभिरचित पंचतंत्र पर आधारित–** गधे व धूर्त सियार की कथा, बंदर की पूछ को बरगद की डाल समझकर पकड़ता व्यक्ति, बंदर को सचेत करता चरवाहा, बन्दर–मगरमच्छ की कथा, धोबी द्वारा पहनाई सिंह की खाल पहने खड़ा गधा, किसान पुत्र का काल सांप, बुद्धि का महत्त्व, जन्मजात अपरिवर्तनीय प्रवृत्तियाँ, वर्गस्तर की हानिकारक संगति, सियार व सिंह शावक की कथा, गदर्भ–सियार कथा आदि।
10. **भगवद्गीता पर आधारित–** कृष्ण द्वारा अर्जुन का मोहभंग, संजय धृतराष्ट्र संवाद, अर्जुन को श्री कृष्ण के दिव्य रूप के दर्शन, भीष्म व अर्जुन द्वारा युद्ध का शंखनाद, विराट स्वरूप का आत्मसात् करते अर्जुन, कृष्ण का विराट स्वरूप, अर्जुन का सारथी कृष्ण आदि।
11. **कृष्णावतारचरित्र सम्बंधी चित्र–** गाय के रूप में कृष्ण, कारावास में कृष्ण जन्म, कृष्ण को ले जाता वासुदेव, पूतनावध, कालिया दमन, कृष्ण बलराम का गोधूली में अभिनन्दन, कृष्ण द्वारा दावानल पान, यशोदा की सीख, गोवर्धन धारण करने पर बलराम द्वारा कृष्ण का आंलिगन, बृज में कृष्ण गोपियाँ, अंधकासुर द्वारा कृष्ण, बलराम व गायों का वध आदि।
12. **एकादशी महात्म्य सम्बन्धी–** एकादशी द्वारा विष्णु की रक्षा, एकादशी व्रत व दान का विधान, एकादशी व्रत का राजा रघु को फल, एकादशी व्रत में निषेध खाद्य आदि।

1. B. बूंदी शैली

राजस्थान राज्य के दक्षिण–पूर्व में 25^0 और 26^0 अक्षांश एवं 75^0 15'' से 76^0 19'' दक्षिण देशान्तर पर भूतपूर्व बूंदी राज्य अवस्थित है। जो चित्र इस प्राचीन बूंदी राज्य क्षेत्र में सृजित हुये, उनकी मौलिकता व नूतनता को दृष्टिगत रख विद्वानों ने उन्हें **'बूंदी शैली'** नाम दिया। जयपर, केन्द्रीय संग्रहालय में संगृहीत **'बूंदी शैली'** के चित्र **'वसंतोत्सव या फागोंत्सव, बीजा–सोरठा की कथा, नदी पार करती सोहनी** व **स्नानधोत्ताऐं'** आदि है।

1. C. कोटा शैली :

बूंदी शैली, कोटा शैली, झालावाड़ शैली एंव अन्य ठिकाणों की कला को हम **'हाड़ौती शैली'** के साथ रख सकते हैं।[9] बूंदी शैली के गर्भ से कोटा शैली का प्रादुर्भाव 17वीं सदीं के उत्तरार्द्ध में हुआ। 1952 ई. तक अज्ञात कोटा शैली को प्रकाश में लाने का श्रेय **कर्नल टी.जी. एण्डर्सन** को जाता है। जयपुर, केन्द्रीय संग्रहालय में कोटा कलम से सम्बंधित संगृहीत चित्र **हीरण का शिकार करती स्त्री, महाराजा रामसिंह, बाघ का शिकार करते**

रामसिंह, बीजा–सोरठा की लोककथा, जनाना ड्योढ़ी में महाराजा रामसिंह का स्वागत, माधवानल कामकन्दला प्रेम प्रसंग, शिकार खेलते महाराजा रामसिंह आदि हैं।

1. D. जयपुर शैली :

जयपुर नगर अपनी स्थापत्य कला, नगरनियोजन, चित्रकला, संगीत कला आदि के लिए देश–विदेशों में प्रख्यात रहा है। जयपुर प्राचीन **ढूंढार** प्रदेश का ही एक भाग है। जयपुर की कला को **कछवाह** राजाओं का आश्रय प्राप्त हुआ, अतः इसे **'कछवाह शैली'** कहा गया। कछवाह राजाओं की पूर्व राजधानी आमेर थी। फलतः **'जयपुर शैली'** को **'आमेर शैली'** विरासत में मिली और **'जयपुर शैली'** इसी **'आमेर शैली'** का विकसित रूप होने से इसे **'आमेर शैली'** भी कहा जाता है। जयपुर, केन्द्रीय संग्रहालय में जयपुर शैली के संगृहीत चित्र– 19वीं सदीं मे चित्रित **अमृतसर के राव शेखा जी,** 19वीं सदीं में लोकशैली मे चित्रित **कैलाश पर्वत पर शिव–पार्वती,** 20वीं सदीं में लोक शैली मे चित्रित **राधा–कृष्ण,** 19वीं सदीं में चित्रित **मुगल बादशाह अकबर, महाराजा सवाई प्रतापसिंह, महाराजा सवाई जगत सिंह, महाराजा सवाई रामसिंह, महाराजा सवाई जयसिंह, महाराजा सवाई ईश्वरी सिंह, राजा पृथ्वीराज, राजा भारमल, राजा भगवानदास, युवावस्था में राजा मानसिंह, वृद्धावस्था में रामा मानसिंह, राजा किशन सिंह आदि के व्यक्ति चित्र , रागमाला का सैट,** 19वीं सदीं में चित्रित **चकरी में खेलते कृष्ण,** 19वीं सदीं में चित्रित **दानलीला व महिषासुर मर्दनी, बारह राशियाँ, तीर्थंकरों की माताओं के 16 स्वप्न, चन्द्रगुप्त के 16 स्वप्न, त्रिकाला संध्या का स्वरूप, दस महाविद्या, मेरू पर्वत का भाव, जैन तीर्थंकरों के प्रतिक चिह्न, जैन तीर्थंकरों की शक्तियाँ, तीर्थंकरों के जन्म पर इन्द्र प्रदत आठ उपहार, रज्मनामा में कुश द्वारा शत्रुहन की सेना का सामना, कंस वध, सीता की अग्नि परीक्षा, राक्षस द्वारा ऋषि भक्षण, तपस्वी का प्रतिशोध** आदि है।

1. E. किशनगढ़ शैली :

राजस्थान राज्य के हृदय प्रदेश अजमेर के पास अवस्थित किशनगढ़, राजस्थान के मध्य में 25^0 49'' और 26^0 59'' उत्तरी अक्षांश तथा 70^0 40'' व 75^0 11'' पूर्वी देशान्तर पर स्थित है।[13] राजस्थान राज्य की महत्त्वपूर्ण व मौलिक **किशनगढ़ शैली** के प्रत्यक्षीकरण का श्रेय निर्विवाद रूप से **डॉ. एरिक डिकिन्तन**[14] एवं **डॉ. फैयाज अली**[15] दोनों को दिया जाता है। जयपुर, केन्द्रीय संग्रहालय में किशनगढ़ शैली से सम्बंधित संगृहीत चित्र– **लाल कालीन पर बैठा वृद्ध व्यक्ति, राम–लखन व सीता झील के किनारें, शृंगार करती बणी–ठणी, बणी–ठणी का शबीह, राधा–कृष्ण की पूजा करते महाराजा सावंत सिंह** आदि प्रमुख हैं।

1. F. बीकानेर शैली :

राजस्थान के उत्तरी भाग में अवस्थित बीकानेर नगर 27^0 12'' व 30^0 12'' उत्तरी अक्षांश तथा 72^0 12'' व 75^0 41'' पूर्वी देशान्तर पर स्थित है। इसी बीकानेर प्रांत में फली–फूली व पनपी **'बीकानेर लघुचित्र शैली'** का विकास काल 18वीं सदीं से 19वीं सदीं माना जाता है। जयपुर, केन्द्रीय संग्रहालय में **बीकानेर शैली** से सम्बंधित संगृहीत चित्र 19वीं सदीं में चित्रित रागमाला चित्रावली से **मालकोस राग का पुत्र, फूलझड़ी छोडती महिला, सत्राजीत की मणी, एक महिला संत कुत्ते के साथ, दीप रक्षा** आदि हैं।

1. G. जोधपुर शैली :

जोधपुर प्रांत एवं यहाँ की विभिन्न रियासतों में संवर्धित होने वाली चित्रशैली को **जोधपुर या मारवाड़ चित्रशैली** के नाम से अभिहीत किया जाता है और इस **जोधपुर शैली** का महत्त्व इस कारण भी सर्वविदीत है कि यह परवर्ती किशनगढ़,बीकानेर, जैसलमेर व अजमेर शैली की जननी है। जयपुर, केन्द्रीय संग्रहालय में संगृहीत **जोधपुर शैली** के चित्र **1800 ई. मे चित्रित बारहमासा सैट, रसिक प्रिया पृष्ठ, अभिसारिका नायिका, संगीत सुनते श्री शालिम सिंह** आदि हैं।

2. मुगल शैली :

भारत में मुगल शासन का प्रादुर्भाव 1526 ई. में मुगल बादशाह बाबर द्वारा किया गया। मुगल शासन की भारत में स्थापना के साथ ही भारत में चित्रकला की **'मुगल शैली'** का बीजारोपण, ईरानी–ईराकी व भारतीय चित्रकला शैली के समन्वय से परिलक्षित हुआ और यह मुगल शैली बाबर, हुमायुँ, अकबर आदि मुगल बादशाहों के शासन काल में जन्मी और पोषित हुई, जहाँगीर के समय यह चर्मोत्कर्ष पर पहुँची, शाहजहाँ के समय इसका पतन प्रारम्भ हुआ और निरंकुश औरंगजेब के समय पतन की पूर्णता प्राप्त की। जयपुर, केन्द्रीय संग्रहालय में मुगल शैली से सम्बंधित संगृहीत चित्र **मुहम्मद शाह की अंतिम यात्रा, एक महिला बच्चे के साथ, महावत खाँ, एक महिला तोते के साथ, एक महिला हाथ में फूल लिए, शाहनामा के कुछ चित्र** आदि प्रमुख हैं।

3. कांगड़ा शैली :

मुगल शैली व राजपूत शैली का आधार ग्रहण कर **'पहाड़ी शैली'** का जन्म हुआ। कांगड़ा शैली, पहाड़ी शैली का एक अतिविशिष्ट शैली है। जिसका उद्भव **1780 ई.** में राजा संसारचन्द्र के राज्याभिषेक के साथ हुआ। जयपुर, केन्द्रीय संग्रहालय में **कांगड़ा शैली** से संबंधित, संगृहीत चित्र **माँ का आशीर्वाद लेते हम्मीर, हम्मीर की प्रिय नर्तकी को बाण मारता खिलजी** आदि हैं।

4. कम्पनी शैली :

अंग्रेजी शासन व सम्पर्क से आयें प्रभाव की छाप भारतीय चित्रकला पर भी पड़ी। फलतः ईस्ट इंडिया कम्पनी के संरक्षण में 19वीं सदीं में जिस चित्रकला शैली का भारत में प्रादुर्भाव हुआ, उसे सर्वप्रथम **रायकृष्ण दास** ने **'कम्पनी शैली'** नाम दिया। यह शैली भारत में प्रचलित पारम्परिक शैलियों से बहुत कुछ भिन्न थी। जयपुर, केन्द्रीय संग्रहालय में राजस्थान व चित्रनापल्ली दक्षिण भारत में चित्रित कम्पनी शैली से सम्बंधित संगृहीत चित्र **संत कबीर सूत कातते हुए, सेवक चायवाला, नाई, नर्तकी– I, नर्तकी– II, बीजणां के साथ महिला, नीला पक्षी, नृसिंह अवतार, मराठा सरदार, अच्छी नस्ल का घोड़ा, काकातुआ** पक्षी आदि है।

वस्तुतः प्रत्येक शैली चित्रों की नामावली देकर प्रतिनिधि चित्रों का चयन का आधार उनकी शैली, संग्रह का अनुपात, विषय वैविध्य, तकनीकी वैशिष्ट्य व प्रस्तुत लघुशोध प्रबन्ध की सीमा और समय का ध्यान रखकर किया गया है। इन सभी लघुचित्रों की जयपुर, केन्द्रीय संग्रहालय की सम्पत्ति की प्रमाणिकता इनके पीछे लगी संग्रहालय निदेशक की मोहर है। इन चित्रों की स्थिति से संतुष्ट होकर ही इन्हें लघुचित्र दीर्घाओं में प्रदर्शित किया गया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

अशोक	:	कला सौन्दर्य और समीक्षाशास्त्र, संजय पब्लिकेशन्स, आगरा, 2006
	:	पश्चिम की चित्रकला, ललित कला प्रकाशन, अलीगढ़, 2005
आर्य, विनोद कुमार	:	दृश्यकला के मूलाधार, अंकुर बुक डिपो, किशनगढ़, 1995
	:	भारतीय चित्रकला का इतिहास, अंकुर बुक डिपो, किशनगढ़, 2005
बनर्जी, एन.आर.	:	म्यूज़ियम एण्ड कल्चर हेरीटेज इन इंडिया, आगम कला प्रकाशन, दिल्ली, 1990
ब्रोडेकर, डॉ. वी.एच.	:	सो यू वॉट गुड म्यूज़ियम एक्जिबीशन, एम.एस. यूनिवर्सिटी, बड़ौदा, 1978
चतुर्वेदी, डॉ. ममता	:	सौन्दर्यशास्त्र, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, 2007
दास, रायकृष्ण	:	भारतीय मूर्तिकला, नागरी प्रचारणी सभा, काशी, 1965
धामा, बी.एल.	:	ए गाइड टू जयपुर एण्ड अम्बर, जयपुर, 1995
गोस्वामी, डॉ. प्रेमचन्द	:	राजस्थान संस्कृति कला एवं साहित्य, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, 2008
	:	राजस्थान की लघु चित्र शैली, राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर, 1972
गुप्त, शिवराम	:	भारतीय संस्कृति के मूलाधार, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, 2002
गुप्त, मोहन लाल	:	जयपुर संग्रहालय एक परिचय, जयपुर, 1995
जैन, संजय	:	म्युजियम और म्युजियोलॉजी, कनिका प्रकाशन, बडौदा, 2007

मूर्ति, सी. शिवराम	:	भारतीय चित्रकला, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नई दिल्ली, 2008
नीरज, जयसिंह	:	राजस्थान की सांस्कृतिक परम्परा, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, 2008
प्रताप, डॉ. रीता	:	भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, 2004
रंघावा, एम.एस.	:	इंडियन मिनियेचर पेंटिग, नई दिल्ली, 1981
सक्सेना, डॉ. लक्ष्मी	:	सौन्दर्यशास्त्र, उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, 2002
शर्मा, गोपिनाथ	:	राजस्थान का सांस्कृतिक इतिहास, जयपुर, 1989
शर्मा, डॉ. सुमहेन्द्र	:	राजस्थान की रागमाला चित्र परम्परा, जयपुर, 1990
	:	मिनियेचर पेंटिग टेकनीक, जयपुर, 1987
	:	स्पेलनडिड स्टाइल ऑफ किशनगढ़, जयपुर, 1991
थिमोथी, एम्ब्रोस एवं क्रिसपिन, पैन	:	म्यूज़ियम बेसिक, 1993
उपाध्याय, विद्यासागर	:	भारतीय कला की कहानी, दी स्टूडेन्ट बुक कम्पनी, जयपुर, 2000